डॉ. पद्मा. आर. पाटील,
एम.ए., एम.फिल. पीएच्.डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416004

# संस्तुति

मैं संस्तुति करती हूँ कि श्री. विजय दत्तात्रय सदामते द्वारा प्रस्तुत ''ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'बस्स! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह में चित्रित दलित चेतना'' शीर्षक का लघु शोध प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल (हिंदी) उपाधि हेतु परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : 17/9/2012

(डॉ. पद्मा. आर. पाटील)
एम.ए., एम.फिल. पीएच्.डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. नाजिम शेख
एम.ए., एम.फिल., पीएच्.डी.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्री. विजयसिंह यादव कला व विज्ञान
महाविद्यालय, पेठ-वडगांव,
जि. कोल्हापुर- 416 112

# प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री. विजय दत्तात्रय सदामते ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि हेतु ''ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'बस्स! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह में चित्रित दलित चेतना'' शोध कार्य मेरे निर्देशन में पूरा किया। इस शोध कार्य से मैं संतुष्ठ हूँ। अज: मैं प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध अंतिम परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने हेतु अनुमति प्रदान करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : 15 सितम्बर, 2012

शोध-निर्देशक

डॉ. नाजिम शेख
एम.ए; एम. फिल; पीएच.डी.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्री. विजयसिंह यादव कला व
विज्ञान महाविद्यालय, पेठ-वडगांव,
जि. कोल्हापुर - ४१६११२.

श्री. विजय दत्तात्रय सदामते
एम.ए.(हिंदी), नेट (जे.आर.एफ)

# प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करता हूँ कि ''ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'बस्स! बहुत हो चुका' शीर्षक से शोध कार्य पूरा किया है। यह शोध कार्य इससे पूर्व किसी भी विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया है। यह मेरा मौलिक शोधकार्य है। मैं यह शोधकार्य एम.फिल उपाधि हेतु परीक्षणार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 15 सितम्बर, 2012

शोध-छात्र

Vdamate

(श्री. विजय दत्तात्रय सदामते)

# प्राक्कथन

# प्राक्कथन

**प्रेरणा एवं विषय-चयन :-**

साहित्य में समाज जीवन का प्रतिबिंब होता है। भूत, भविष्य और वर्तमान की ओर प्रेरित करने का कार्य साहित्य करता है। मानव जीवन की गतिविधियाँ और उसके विकास एवं क्रिया-व्यापारों का अंकन साहित्य में होता है। साहित्य की अन्य विधाओं की तरह कविता विधा मानव जीवन के अत्यंत निकटस्थ है। अत: यह जीवनाभिमुख साहित्य विधा है।

स्नातक और स्नातकोत्तर अध्ययन करते समय मुझे मराठी दलित साहित्य पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मराठी के दलित रचनाकार दया पवार, नामदेव ढसाल, नारायण सुर्वे आदि के साहित्य ने उस समय मुझे बहुत प्रभावित किया। स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् जिज्ञासावत् मैंने आधुनिक हिंदी साहित्य में इस प्रकार का लेखन है या नहीं इसकी छानबीन की । तब मुझे पता चला कि स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में हिंदी साहित्य में भी प्रचुर मात्रा में दलित साहित्य लिखा जा रहा है। इसी बीच मैंने मोहनदास नैमिशराय, जयप्रकाश कर्दम, रामधारीसिंह दिवाकर, राजेंद्र यादव, मैत्रेयी पुष्पा, ओमप्रकाश वाल्मीकि आदि साहित्यकारों का साहित्य पढ़ां। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के 'बस्स! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह ने मुझे उस समय इतना प्रभावित किया कि मैं इस काव्यसंग्रह की हर कविता के संबंध में सोचता रहा। इस काव्यसंग्रह में दलित चेतना का स्वर प्रखरता से अभिव्यक्त हुआ है । समकालीन सामाजिक समस्याओं को ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अत्यंत अंतरंग से अभिव्यक्त किया है। निर्धन, साधनहीन, गरीब, दलित जनता के साथ उनका निकट संबंध रहा है। इन कविताओं में वर्तमान समाज की भीषण विषमता दिखाई देती है। इन कारणों से ही मैंने ''ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'बस्स! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह में चित्रित दलित चेतना'' इस विषय पर शोधकार्य करने का संकल्प किया। प्रस्तुत विषय को लेकर मैंने हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. पद्मा पाटील जी और गुरुवर्य डॉ. नाजिम शेखजी से चर्चा की और

आपके सुझावों के अनुसार लघु शोध-प्रबंध के लिए ''ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'बस्स! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह में चित्रित दलित चेतना'' विषय का चयन किया।

**विषय का महत्व -**

आज दलित साहित्य का सभी विधाओं में विकास हो रहा है। दलित साहित्यकारों के साथ-साथ गैर दलित साहितयकारों का भी इसमें काफी योगदान है। एक उपेक्षित समाज साहित्य में सम्मान प्राप्त कर रहा है शेध-छात्र  राजर्षी शाहु महाराज, महात्मा ज्योतिराव फुले और डॉ बाबासाहब आंबेडकरजी ने दलित जीवन का चित्रण प्रबलता से किया है। हिंदी में उनके विचारों से प्रभावित कई कवि कविता लिख रहे है। ओमप्रकाश वाल्मीकिजी की कविताओं में दलित चेतना, और सामाजिक विद्रोह को प्रकट किया है। इन विचारों की तलाश की दृष्टि से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का अपना अलग महत्व रख है।

**विषय का उद्देश्य -**

स्वातंत्र्योत्तर काल में आधुनिक हिंदी साहित्य में दलित साहित्य यह चर्चित विषय रहा है। दलित साहित्यकारों ने दलित जीवन की समस्याएँ, दलित जीवन का यथार्थ चित्रण, दलित नारियों की नरक यातनायें आदि विषयों पर अपना साहित्य रचा है। ओमप्रकाश वाल्मीकि उन्हीं साहित्यकारों में रहे जिन्होंने दलित जीवन को खुद सहा है। उन्हें अभावग्रस्त जीवन जिना पडा, रोजी-रोटी के लिए उन्हें दर दर भटकना पडा। अपनी जीवन की यातनाओं का प्रतिबिम्ब उनकी कविताओं में हमें दिखाई देता है। ओमप्रकाशन वाल्मीकिजी द्वारा रचित 'बस्स! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह की हर कविता दलित चेतना तथा सामाजिक विद्रोह प्रकट करती है। दलितों को शोषण के खिलाफ शिक्षित बनकर संगठित होकर, संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के विचारों का साहित्य शोषित, पीडित, दलितों के वास्तविक जीवन का चित्रण करनेवाला साहित्य हैं।

**प्रस्तुत विषय पर संपन्न शोधकार्य -**

मेरी जानकारी के अनुसार ओमप्रकाश वाल्मीकिजी के साहित्य पर निम्नानुसार अनुसंधान हुआ है।

१. 'बस्स! बहुत हो चुका' संवेदना एवं शिल्प का अध्ययन - रमेश कुमार (रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर उत्तरप्रदेश)

ओमप्रकाश वाल्मीकि के कविताओं में दलित चेतना पर शोध कार्य संपन्न नहीं हुआ है। और इसी अभाव की पूर्ति करने का प्रयास मैंने अपने शोध कार्य से किया है।

प्रस्तुत विषय की सीमा एवं व्याप्ति निर्धारित होनी चाहिए तभी शोध कार्य सुचारु रुप से संपन्न होता है। अध्ययन की दृष्टि से मैंने अपने लघु-शोध प्रबंध को निम्नाकित पाँच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन प्रस्तुत किया है।

**प्रथम अध्याय :- 'ओमप्रकाश वाल्मीकि जीवन परिचय एवं साहित्य'**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत ओमप्रकाश वाल्मीकि का जीवन तथा साहित्य का परिचय दिया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत जन्म एवं जन्मस्थान, माता-पिता, बचपन, पारिवारिक स्थिति, शिक्षा, नौकरी, वैवाहिक जीवन तथा व्यक्तित्व की विशेषताएँ आदि पर प्रकाश डाला है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत उनके साहित्य परिचय एवं उनके साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। साथ ही सम्मान एवं विभिन्न पुरस्कारों का परिचय प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

**द्वितीय अध्याय :- 'दलित चेतना - स्वरुप एवं विवेचन'**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने दलित शब्द का अर्थ, परिभाषा, चेतना शब्द का अर्थ एवं परिभाषा, दलित साहित्य का स्वरुप और दलित साहित्य की विशेषताओं का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

**तृतीय अध्याय :- 'बस्स ! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह में चित्रित दलित चेतना**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत 'बस्स! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह में चित्रित दलित चेतना का विवेचन किया है। गुलामी, रुढ़ी-परम्परा जाति व्यवस्था का विरोध, दलित नारी का चित्रण, दलितों की राजनीति, शिक्षा व्यवस्था, आर्थिक स्थिति का चित्रण किया गया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

**चतुर्थ अध्याय :- 'बस्स ! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह का भाषासौंदर्य**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत 'बस्स! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह की शिल्पगत विशेषताओं को दर्ज किया है। इन कविताओं में चित्रित बिम्बों, प्रतिकों, भाषा में देशज, विदेशी शब्दों तथा मुहाँवरों, कहावतें आदि का विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

**उपसंहार -**

उपर्युक्त अध्यायों के विवचेन के उपरान्त जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है वे समन्वित रुप से उपसंहार में दर्ज किए है।

**शोध प्रविधि -**

प्रस्तुत शोध कार्य संपन्नता के लिए विवेचनात्मक तथा वर्णनात्मक पध्दति का उपयोग किया गया है।

**ऋणनिर्देश -**

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से सहायता करनेवाले तथा मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देनेवाले गुरुजनों, हितचिंतकों एवं आत्मीयजनों के प्रति कृतज्ञता - ज्ञापन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

यह लघु शोध-प्रबंध आदरणीय गुरुवर्य डॉ. नाजिम शेख जी के प्रतिभा संपन्न, आत्मीय प्रेरक एवं कुशल निर्देशन का ही फल है। अपने अनेक व्यस्तताओं के बावजूद भी उन्होंने मुझे मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है आपके प्रति शब्दों मे आभार व्यक्त

करना असंभव है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेह तथा मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

शिवाजी विश्वविद्यालय हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रा. डॉ.पद्मा पाटील, आदरणीय गुरुवर्य प्रा.डॉ. अर्जुन चव्हाण आदि सभी का सहयोग तथा समय-समय पर उनके द्वारा किए हुए निर्देशों से मेरे शोध कार्य का मार्ग प्रशस्त हुआ।

इस लघु शोध प्रबंध की परिपूर्ति के लिए मेरे आदरणीय माताजी और पिताजी के शुभ आशीष का ही फल हैं कि मैं अपने कार्य पूर्ति में सफल रहा हूँ। मेरे आदरणीय स्नेही रविंद्रनाथ भंडारे, श्री. यौगतराव शेजूल, श्री. कमलाकर जाधव, और मेरे भाई उदय सदामते जिसने मुझे प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला है। अत: मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

मेरे मित्र और कई हितचिंतकों की शुभ कामनाएँ मेरे साथ रही हैं प्राचार्य आशोक बाबर, प्रा. डॉ भस्मे, प्रा. श्रीकांत सोनवने जिनसे मुझे समय-समय पर प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिला है। शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल, पदाधिकारी तथा कर्मचारियों को मैं धन्यवाद देता हूँ। पी.व्ही.पी महाविद्यालय कवठेमहांकाल के ग्रंथालय एवं अन्य कर्मचारियों के प्रति मैं विशेष ऋणी हूँ जिन्होंने पुस्तकें जुटाने में अत्यंत तत्परता दिखाई।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के टंकण को सुचारु रुप से पूर्ण करने वाले मेरे मित्र श्री. जयकर मनोज का मैं आभारी हूँ। जिनकी तत्परता से लघु शोध-प्रबंध समय पर प्रस्तुत करने में मुझे बेहद सहयोग मिला है।

अंत में इस शोध कार्य को संपन्न करने के लिए परोक्ष एवं प्रत्यक्ष रुप से जिन्होंने सहायता की है मैं उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और इस लघु शोध प्रबंध को विद्वतजनों के सम्मुख विनम्रतापूर्वक परीक्षण हेतु प्रस्तुत करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : 15 सितम्बर, 2012

शोध-छात्र
Sadamate
(श्री. विजय दत्तात्रय सदामते)

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.